का. न. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

ज्ञानपुर, भदोही

एम. ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

प्राचीन इतिहास के द्वितीय प्रश्न पत्र हेतु महत्वपूर्ण तथ्य

डॉ0 प्रत्यञ्चा पाण्डेय

असि. प्रोफेसर. – प्रा. इतिहास विभाग

हड़प्पा वास्तुकला

- भारत में सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता में सुव्यवस्थित स्थापत्य निर्माण के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। भारतीय संस्कृति की लंबी एवं विधि पूर्ण कहानी का प्रारंभ बिंदु है। इस विकसित सभ्यता का ज्ञान वहां के उत्खनन से प्राप्त हुआ।
- इस हड़प्पा सभ्यता की खुदाई 1921 में दयाराम साहनी ने एवं 1922 में राखाल दास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की यह दोनों स्थान इस सभ्यता के केंद्र बिंदु रहे।
- भारत में विभिन्न जलाशयों एवं प्राकृतिक गुफाओं में मानव के रहने के साक्ष्य मिले हैं। भारतीय वास्तुकला के प्राचीनतम नमूने हड़प्पा मोहनजोदड़ो, रोपण, कालीबंगा, लोथल रंगपुर आदि स्थलों से पाए गए हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के समस्त नगर 'ग्रिड प्लानिंग' के तहत बसाये गए। आयताकार खंड में विभाजित नगर जहां सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं। हड़प्पा सभ्यता की नगर स्थापत्य में सार्वजनिक कुएं तथा सार्वजनिक शौचालय भी पाए गए। विशाल स्नानागार हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख इमारतों में गिना जाता है।
- मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के पश्चिमी तट पर पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित है। यह स्थल हड़प्पा सभ्यता की राजधानी माना जाता था। यहां से विशाल स्नानागार, अन्नागार, विशाल सभा भवन, पक्की ईंटें, खांचेदार नालियां, नर्तकी की मूर्ति (कांस्य), मेसोपोटामिया की मुहर, पशुपति मोहर, श्रृंगार सामग्री, मकान में खिड़की के साक्ष्य मिले हैं।
- हड़प्पा से विशाल अन्नागार, पत्थर से बनी लिंग योनि, मात्र देवी की मूर्ति, गेहूं जौ के दाने सोने की मुहर, सवाधान पेटिका, कब्रिस्तान R-37, मृदभांड आदि प्राप्त हुए।
- लोथल से विशाल गोदिवाडा युग्म में समाधान, अग्निवेदिका, मिस्र की ममी आदि प्राप्त हुए। कालीबंगा राजस्थान के घग्घर नदी के तट पर स्थित है। यहां से चूड़ी निर्माण उद्योग, कांस्य उद्योग, कब्र, शल्य चिकित्सा आदि की जानकारी मिलती है।
- धौलावीरा गुजरात के कच्छ क्षेत्र में लूनी जोजरी लाइन पर स्थित मध्यवर्ती शहर की विशेषता वाला शहर है। आलमगीरपुर भारत के उत्तर प्रदेश में हिंडन नदी के तट पर स्थित यह स्थल हड़प्पा सभ्यता की सुदूर पूर्वी सीमा थी। यहां से रीछ सर्प डिजाइन की विदेशी मुहावरे तथा वस्त्र उद्योग के साक्ष्य मिले हैं।
- राखीगढ़ी हरियाणा में स्थित है। यहां से अन्नागार और रक्षा प्राचीर दीवार के साक्ष्य मिले हैं । चनुदड़ो दोनों वर्तमान पाकिस्तान में स्थित है। स्थित सिंधु घाटी सभ्यता का यह स्थल 'जुड़वा शहर' के रूप में पहचाना जाता है। यहां से चाकू, कुल्हाड़ी, फिश-हुक्स टेराकोटा आदि की जानकारी मिलती है।
- बनावली से बैल गाड़ी के पहिए मिट्टी के हल अग्निवेदिका नारी मूर्ति तथा सीधी सड़क के साक्ष्य मिलते हैं।

मौर्य कला

- भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में मौर्य काल का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । मौर्य कला ने ना केवल भारतीय वास्तु परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखा, अपितु उसने समकालीन कला को एक नवीन आयाम भी प्रदान किया ।
- सारनाथ का अशोक स्तंभ मौर्यकालीन स्तंभ कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है इसके शीश पर चार सिंह हैं जो एक-दूसरे की ओर पीठ किए हुए हैं इसके नीचे घंटे के आकार के पद्म के ऊपर चित्र, वल्लरी में एक हाथी, चौकड़ी भरता हुआ है घोड़ा, एक सांड तथा एक सिंह की उभरी हुई आकृतियां हैं । इसके ऊपर धर्मचक्र भी है । इसमें मुण्डकोपनिषद का एक सूत्र 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है।
- मौर्य काल की सर्वोत्कृष्ट नमूने अशोक के एकाश्म स्तंभ है । अशोक के स्तंभ एकाश्म अर्थात एक ही पत्थर से तराशकर बनाए गए हैं । अशोक के स्तंभ स्वतंत्र जगहों पर लगाए गए हैं। अशोक स्तंभों के शीर्ष पर पशुओं की आकृतियां हैं। अशोक के स्तंभ नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः पतले होते गए हैं । अशोक के स्तंभ बिना चौकी या आधार के भूमि पर टिकाए गए हैं । अशोक के स्तंभों के शीर्ष पर लगी पशु मूर्तियों का एक विशेष प्रतीकात्मक अर्थ है, जिसकी समुचित व्याख्या भारतीय संदर्भ में ही संभव है ।
- अशोक महान ने बराबर पहाड़ी में चार गुफाएं - लोमस ऋषि गुफा, सुदामा गुफा, कर्णचौपर और विश्व झोपड़ी गुफा का निर्माण कराया। इनमें लोमश ऋषि की गुफा का स्थापत्य की दृष्टि से विशेष महत्व है। बराबर की ज्यादातर गुफाएं दो कक्षों की बनी हैं, जिन्हें पूरी तरह से ग्रेनाइट को तराशकर बनाया गया है। इनमें एक उच्च स्तरीय पॉलिश युक्त आंतरिक सतह और गूंज का रोमांचक प्रभाव मौजूद है। यहां पर अशोक के गुफा-लेख भी अंकित हैं।
- जबकि, अशोक के पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ी में तीन गुफाओं का निर्माण करवाया। दशरथ द्वारा निर्मित गुफाओं में गोपिका गुफा उल्लेखनीय है। गोपिका गुफा के द्वार पर उत्कीर्ण गुफा लेख से, इसे दशरथ द्वारा बनवाए जाने की पुष्टि हुई है। यह गुफा 44 फुट लंबी, 19 फुट चौड़ी और 10 फुट ऊंची है। शिल्प की दृष्टि से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण नहीं है।
- जूनागढ़ में खपराखोडिया नामक गुफाएं भी अशोक कालीन मानी जाती हैं। गिरनार पर्वत की ओर जाने के लिए दागश्वरी द्वार पर बनी हुई, बावा प्यारी नाम की गुफाओं को भी अशोक कालीन माना जाता है। अशोक कालीन गुफा वास्तु का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि - तत्कालीन गुफाएं दो प्रकार की होती थी, चैत्य और विहार।

चैत्य, विहार और स्तूप

चैत्य: प्राचीन भारतीय शासकों ने अनेक चैत्यों का निर्माण किया। चैत्य महान व्यक्तियों की समाधि थी। कालांतर में इनका प्रयोग पूजा-स्थलों के रूप में होने लगा । भारत में स्थित अधिकांश चैत्य महात्मा बुद्ध से संबंधित हैं। महात्मा बुद्ध की मृत्यु के पश्चात उनके अनुयायियों ने उनकी पूजा प्रारंभ की। कुछ प्रमुख चैत्य इस प्रकार हैं।

- **कार्ले का चैत्य** - इस चैत्य का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल में हुआ था। इस चैत्य में एक विशाल स्तूप का भी निर्माण किया गया, जिसके ऊपरी भाग में कमल के फूल की आकृति विद्यमान है।
- **नासिक का चैत्य** - इस चैत्य का निर्माण भट्ट पालक द्वारा प्रथम शताब्दी में कराया गया। यह महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित है। इस चैत्य को पाण्डुलेण के नाम से भी जाना जाता है।
- **भाजा चैत्य** -यह चैत्य दक्षिण भारत में स्थित है। इसका निर्माण किसके द्वारा हुआ यह स्पष्ट नहीं है। इस चैत्य का निर्माण चट्टान को खोखला कर के किया गया है। इस चैत्य के अंतिम भाग में स्तूप का भी निर्माण किया गया है।
- **अजंता का चैत्य** - इस चैत्य का निर्माण दूसरी शताब्दी में हुआ। अजंता की प्राप्त गुफाओं में से चार गुफाएं चैत्य से संबंधित है। इस चैत्य में मंडप के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के चित्राकृतियां भी उत्कीर्ण हैं।

विहार : विहार प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। विहार में बौद्ध संघों का निवास स्थान था। इन विहारों_का निर्माण पर्वतों को काटकर, चट्टानों को तराशकर किया जाता था। इन विहारों में तरह-तरह की आकृतियां उत्कीर्ण रहती थी। तथा दीवारों के ऊपर चमकदार पॉलिश भी लगे होते थे।

- **नासिक विहार** - यह विहार महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित है। इस स्थान पर कुल 12 विहारों का निर्माण किया गया था। इन विहारों में 'गौतमी विहार' सर्वाधिक प्रसिद्ध था। इन विहारों बौद्ध भिक्षु बहुतायत मात्रा में निवास करते थे। इस विहार की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यहां धार्मिक वाद-विवाद का आयोजन किया जाता था।
- **नहपान विहार** - इस विहार के सिर्फ कुछ ही अवशेष विद्यमान हैं। यह एक वर्गाकार रूपी विहार था। नहपान विहार में भिक्षु निवास करने के साथ-साथ विद्या अध्ययन का भी करते थे।
- **भाजा विहार** - यह बिहार दक्षिण भारत ने भाजा नामक स्थान पर स्थित है। इस बिहार में भगवान बुद्ध की मूर्तियां भी विद्यमान हैं। यह एक अत्यंत विशाल विहार था। जिसमें

बुद्ध भिक्षु निवास करने के साथ-साथ विद्या अध्ययन भी कार्य करते थे। इस बिहार के प्रवेश द्वार पर भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक आकृतियां उत्कीर्ण है।

- **नालंदा विहार** - यह बिहार राज्य के गया जिले में स्थित है। इन विहारों का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक तथा उसके उत्तराधिकारी राजा दशरथ ने कराया था। इन विहारों में आजीवक संप्रदाय के भिक्षुक निवास करते थे। जो विद्या अध्ययन का कार्य करते थे।

स्तूप:

- **सांची स्तूप -** स्तूपों में सांची का स्तूप प्रसिद्ध है। यहां विदिशा के निकट एक पहाड़ी है जिसे प्राचीन साहित्य में काकानाड या चेतियगिरी कहा गया है। सांची के स्तूप की अन्य विशेषता है, इसकी वेदिका पर कोई अलंकरण नहीं है। अतः सादगी ही इसकी विशेषता है। सांची के स्तूप की पेटिका में अशोक द्वारा भेजे गए बौद्ध प्रचारक की सूची है। स्तूप पेटिका में राख और अस्थि अवशेष मिले हैं। वह सारी पुत्र और बुद्ध के शिष्य के माने गए हैं।
- **भरहुत स्तूप -** शुंगआंध्र युग बौद्ध कला के लिए रचनात्मक अवधि का काल था। शुंग शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों थे। इस समय बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार हुआ। यह मध्य प्रदेश के सतना नगर के दक्षिण में स्थित है। अशोक के काल में निर्माण तथा शुंग काल में विकास हुआ। इसमें पॉलिशदार लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। स्तूप मे रेलिंग की डिजाइन मुख्य आकर्षण का बिंदु है। पत्थरों पर जटिल डिजाइन बनाई गई है। कमल की डिजाइन कहीं-कहीं यक्ष की प्रतिमाएं, लक्ष्मी, हाथी, हिरण, मोर इत्यादि की डिजाइनें हैं। स्तूप तथा वेदिका के बीच प्रदक्षिणा पथ है। वेदिका में कुल 80 स्तंभ हैं।
- **अमरावती स्तूप** - स्तूप आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के किनारे बसे शहर अमरावती के मुख्य आकर्षण में से एक है। अमरावती को अब नए शहर के रूप में विकसित किया जा रहा है। प्राचीन साहित्य में इसे **धान्य कटक** कहा गया है। इसकी खोज 1997 ईस्वी में मैकेंजी ने किया था। मौर्योत्तर काल में सात वाहनों और इक्ष्वाकुओं द्वारा विकसित किया गया अमरावती शहर द्वितीय शताब्दी ईस्वी पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व तक प्रसिद्ध रहा। उत्खनन में यहां से हीनयानी स्तूप का ढांचा प्राप्त, स्तूप पर की गई नक्काशियो बुध और उनकी शिक्षाओं तथा उनके जीवन की कहानियों का चित्रण है। अमरावती स्तूप के वेदिका निर्माण में संगमरमर का प्रयोग किया गया है। यहां स्तुति के सामने एक खड़ा स्तंभ है, जिसे आयात स्तंभ कहा जाता है।
- **बोधगया -** बौद्ध धर्म के इतिहास में बोधगया का स्थान मुख्य बौद्ध तीर्थ माना गया है। यहां पर बुध (सिद्धार्थ) को ज्ञान प्राप्त हुआ है। यह स्थल बिहार में गया से 6 मील दक्षिण में स्थित है। सम्राट अशोक के बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति के स्थल पर बोध मंदिर का निर्माण करवाया था। बोधगया में ही ऋषि कश्यप का आश्रम और सुजाता का घर था। इस स्थान को बोधिद्रुम तथा बोधी मठ कहा जाता है।

कुषाण कला

- इस काल में कला का आधार मुख्यतः बौद्ध धर्म ही रहा।
- कनिष्क के शासनकाल में कला के क्षेत्र में दो स्वतंत्र शैलियों का विकास हुआ -
  1. गंधार कला 2. मथुरा कला।

गंधार कला -

- गंधार कला शैली को ग्रीक-बौद्ध शैली भी कहा जाता है। इसका सर्वाधिक विकास कुषाण काल में हुआ। इस काल की विषयवस्तु बौद्ध परंपरा से ली गई थी किंतु निर्माण का ढंग यूनानी था।
- गांधार शैली की प्रारंभिक बौद्ध मूर्तियों में बुद्ध का मुख्य ग्रीक देवता अपोलो से मिलता जुलता है। मूर्तियों का परिवेश रोमन 'टोगा' जैसा है। इसवी सन की तीसरी सदी में गंधार कला के उदाहरण हद्दा और जैलियन में मिले हैं।
- गंधार कला के अंतर्गत बुद्ध तथा बोधिसत्वों की बहुसंख्यक मूर्तियों का निर्माण हुआ। बोधिसत्व मूर्तियों में सबसे अधिक मैत्रेय की है।
- गांधार कला शैली की उत्पत्ति का स्रोत एशिया माइनर तथा हेलेनिस्टिक कला थी।
- गंधार कला के अंतर्गत बुध की धर्मचक्रमुद्रा, ध्यानमुद्रा, अभयमुद्रा और वरदमुद्रा आदि मूर्तियों का निर्माण किया गया।

मथुरा कला:

- जैन धर्म के अनुयायियों ने मथुरा में मूर्तिकला की एक शैली को प्रश्रय दिया है। जहां शिल्पीयों ने महावीर की मूर्ति बनाई।
- यह कला शैली, जो मथुरा शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई, ई० पू० पहली शताब्दी के अंत में आरंभ हुई। कालांतर में कुषाण शासकों को प्रश्रय पाकर यह फूली फली।
- भारतीय कला में गड़ी हुई बुध की सबसे प्राचीन मूर्ति मथुरा में ही मिली थी।
- बुद्ध के जन्म, अभिषेक, महाभिनिष्क्रमण, संबोधि धर्मचक्रप्रवर्तन, महापरिनिर्वाण आदि जीवन की विभिन्न घटनाओं का कुशलता पूर्वक अंकन मथुरा कला के शिल्पीओं द्वारा किया गया।
- मथुरा कला के अंतर्गत बुध की धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा, अभयमुद्रा ध्यानमुद्रा, भू-स्पर्शमुद्रा आदि मूर्तियों का निर्माण किया गया। मथुरा शैली की मूर्तियों में आध्यात्मिकता एवं भावुकता की प्रधानता थी। मथुरा कलाकार भरहुत और सांची की कलाओं में साथ निकट का संबंध है। यह कला (मथुरा कला) विशुद्ध भारतीय कला है। **मथुरा कला शैली आदर्शवादी तथा गंधार कला शैली यथार्थवादी है।**

गुप्त एवं गुप्तोत्तर कला, वास्तु कला, स्थापत्य कला

- स्थापत्य के विकास की दृष्टि से गुप्त काल को प्राचीन भारत के इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। देश की आर्थिक समृद्धि तथा राजनैतिक स्थिरता के परिणाम स्वरूप स्थापत्य के क्षेत्र में इस काल में चौमुखी विकास हुआ। गुप्त काल संरचनात्मक मंदिर निर्माण का काल था। गुप्त कालीन मंदिरों की कुछ सामान्य विशेषताएं हैं।
- गुप्त काल के अधिकांश मंदिर पाषाण निर्मित हैं। केवल भीतरगांव तथा सिरपुर के मंदिर ही ईटों से बनाए गए। गुप्तकालीन प्राचीनतम उदाहरण सांची का मंदिर है, तथा इसका पूर्ण विकसित स्वरूप देवगढ़ के दशावतार मंदिर में परिलक्षित होता है। देवगढ़ का दशावतार मंदिर पंचायतन रचना शैली का मंदिर है। जब मुख्य मंदिर 4 सहायक मंदिरों से घिरा हुआ होता है तो इससे पंचायतन रचना शैली का मंदिर कहते हैं। प्रारंभिक गुप्तकालीन मंदिर इस प्रकार हैं -

  तिगवा का विष्णु मंदिर जबलपुर (मध्य प्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर सतना (मध्य प्रदेश), नचना कुठारा का पार्वती मंदिर पन्ना (मध्य प्रदेश), भीतरगांव का मंदिर कानपुर (उत्तर प्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर ललितपुर (उत्तर प्रदेश)।
- खजुराहो के पश्चिमी समूह में लक्ष्मण, कंदरिया महादेव, मतंगेश्वर, लक्ष्मी, जगदंबा चित्रगुप्त, पार्वती तथा गणेश के मंदिर और वराह नंदी के मंडप शामिल हैं।
- खजुराहो के पूर्वी समूह के मंदिरों में ब्रह्मा, वामन, जवारी व हनुमान मंदिर तथा जैन मंदिरों में आदिनाथ, पार्श्वनाथ, आदिनाथ, घंटाई मंदिर शामिल हैं।
- खजुराहो के समस्त मंदिरों में कला तकनीक, प्रसिद्धि आदि की दृष्टि से कंदारिया महादेव मंदिर को सर्वोत्तम आंका गया है। खजुराहो के मंदिरों में सर्वश्रेष्ठ कंदारिया महादेव का मंदिर है। इसके शिखर व अलंकारों की अपनी विशिष्ट पहचान है।
- इस मंदिर को पहुंचने में लिए सीढ़ियों से होकर तेरह ऊंचे चबूतरे पर चढ़ना होता है, जिस पर यह मंदिर बना है। इसके अंगों में एक विचित्र ढलाव है। गर्भ-ग्रह अंत में सबसे ऊंचाई पर बना है। मंदिर में मुख्य प्रतिमा कंदरिया महादेव की है। मंदिर के उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी कोनों पर बने आलो में ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं।
- लक्ष्मण मंदिर, चंदेल वंश के शासक यशोवर्मन द्वारा निर्मित हिंदू तथा जैन धर्म को सम्मिलित रूप से समर्पित है। प्रधान देवता के रूप में भगवान विष्णु की त्रिमुखी प्रतिमा गर्भ-ग्रह में स्थापित की गई है। वास्तु कला का विशेषता के तौर पर यह मंदिर लाल बलुआ पत्थर द्वारा निर्मित सामान्य ऊंचाई (लगभग 30 मीटर) पर स्थित है। मंदिर मुख्यतः नागर व उड़िया शैली की वास्तुकला द्वारा निर्मित है।

गुजरात के स्थापत्य

- गुजरात के स्थापत्य को 'सोलंकी उप-शैली, चालुक्य उपशैली' व 'मंडोवार उपशैली' भी कहा जाता है। इसके तहत हिंदू मंदिरों के साथ जैन मंदिरों का निर्माण हुआ। माउंट आबू का आदिनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढेरा का सूर्य मंदिर सहित पालिताना के बहुत से मंदिर इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- माउंट आबू पर बने मंदिरों में संघ वर्कर के 2 मंदिर हैं - भीलवाड़ा का जैन मंदिर तथा तेजपाल मंदिर (अर्बुदगिरी के बगल में)।
- माउंट आबू के मंदिरों का निर्माण सोलंकी शासक भीम सिंह प्रथम के मंत्री दंडनायक विमल ने करवाया था। सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन ना मानकर गुर्जर प्रतिहारों की देन माना जाता है।
- गुजरात का मोढेरा का सूर्य मंदिर भग्नावस्था में है। इस मंदिर के सामने एक आयताकार जलकुंड है, जिसके चारों ओर चबूतरा बना है। चबूतरे से नीचे उतर कर कुंड में जाने के लिए सीढ़ियां हैं। इनमें कई छोटे-बड़े मंदिर हैं, यह सभी सुनियोजित हैं।
- राजस्थान का मंदिर आबू पर्वत पर बना मोढेरा मंदिर के ही समकालीन है। यह राजस्थान के जैन मंदिरों में अद्‌वितीय है। यह श्वेत संगमरमर पत्थर का बना है, जिसके चारों ओर चारदीवारी है। इस मंदिर में एक विशाल आंगन है। जिसमें चार और छोटी-छोटी कोठारिया हैं। इनमें जैन तीर्थंकरों, अधिकांशत आदिनाथ की मूर्तियां विराजमान हैं। इस मंदिर में सामने पूरब की ओर 6 स्तंभों का मंडप है। इसके बीच में जैनियों के पवित्र पर्वतों का दृश्य बना है, जिसे समोसण कहा जाता है। इसके आगे विमल शाह का परिवार अंकित है। यह मंदिर 45 फीट लंबे तथा 95 फीट चौड़े प्रांगण में बना है।
- ओसिया का जैन महावीर मंदिर का निर्माण 8 वीं शताब्दी में हुआ था। लेकिन 10वीं शताब्दी में इसकी मरम्मत करानी पड़ी। इस दौरान इसमें नया हिस्सा जोड़ा गया। यहां सीढ़ीनुमा आकृति पर मंडप बनाया गया है। जिसे नल मंडप की संज्ञा दी गयी है। निर्माण शैली में नल का अर्थ 'सीडी' होता है, इसकी चौखट भी गुप्त शैली में अलंकृत है।

उड़ीसा का स्थापत्य

- इसका प्रचलन आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक रहा। इसमें विभिन्न शासक वंश, यथा-शैल, सोम, भौम, पूर्वी गंग, चेदि गंग आदि वंशों से संरक्षण मिला है।
- उड़ीसा के मंदिर मुख्यत: भुवनेश्वर, पूरी और कोणार्क में स्थित है। भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, राजरानी मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर इस शैली के श्रेष्ठ उदाहरण है।

- सूर्य मंदिर (कोणार्क) का निर्माण गंग वंश के शासक नरसिंह देव प्रथम ने कराया था। कोणार्क के सूर्य मंदिर को 1984 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया। कोणार्क के ब्लैक पैगोडा (सूर्य मंदिर) के अतिरिक्त उत्तराखंड के अल्मोड़ा में कटारमल सूर्य मंदिर है। लिंगराज मंदिर उड़ीसा स्थापत्य की संपूर्ण विशेषताओं का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- कोणार्क का सूर्य मंदिर मध्य कालीन वास्तुकला का अनोखा उदाहरण है। यह मंदिर पत्थरों पर हुई अद्भुत नक्काशी के लिए काफी प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण राजा नरसिंह देव ने 13 वीं शताब्दी में करवाया था। यह अपने विशिष्ट आकार और शिव कला के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। इसी कारण इसे यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल की सूची में रखा गया है।
- ऐसी मान्यता है कि, मंदिर में वजनदार गुंबद के हिसाब से इसकी नींव नहीं बनी थी और यह गुंबद मंदिर का हिस्सा था, पर इसकी चुंबकीय शक्ति की वजह से जब समुद्री पोत दुर्घटनाग्रस्त होने लगे, तब यह गुंबद हटाया गया। शायद इसी वजह से इसे 'ब्लैक पैगोडा' भी कहा जाता है। मंदिर को रथ का स्वरूप देने के लिए मंदिर के आधार पर दोनों ओर एक जैसे पत्थर के 24 पहिए बनाए गए। पहियों को खींचने के लिए सात घोड़े बनाए गए।
- मंदिर की ऊंचाई 70 मीटर है। मंदिर का महामंडप चबूतरे सहित कुल 34 मीटर ऊंचा है। इसकी विशालता से मुख्य मंदिर की ऊंचाई का अनुमान लगाया जा सकता है। इस मंदिर में 3.5 मीटर ऊंची सूर्य देव की मूर्ति बेहद आकर्षक है। मूर्तियां मुख्यतः लेटेराइट, क्लोराइड, डोलोमाइट नाम के पत्थरों से बनाई गई।
- लिंगराज मंदिर उड़ीसा शैली का अद्भुत एवं उत्कृष्ट नमूना है। भुवनेश्वर कोणार्क व पुरी के संयोजन से गठित उड़ीसा के स्वर्ण त्रिभुज का बड़ी संख्या में तीर्थ यात्रियों तथा पर्यटकों द्वारा दौरा किया जाता है। लिंगराज मंदिर का निर्माण ययाति केसरी द्वारा सातवीं शताब्दी में किया गया था। जिन्होंने अपनी राजधानी जयपुर से भुवनेश्वर स्थानांतरित की। लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर का सबसे बड़ा मंदिर है। लिंगराज मंदिर मध्यकालीन शैली का विशालतम सर्व प्रमुख मंदिर है।
- पुरी का जगन्नाथ मंदिर 1110 ईस्वी में बनाया गया था। पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर चार धामों में सबसे प्रसिद्ध तीर्थ मंदिर है। इसे एक ऊंचे स्थान पर बनाया गया है। लिंगराज मंदिर की भांति इस मंदिर में भी श्री मंदिर, जगमोहन, नट मंदिर तथा भोग मंडप को एक ही अक्ष रेखा ने बनाया गया है। मंदिर के ठीक सामने 'एकाश्म गरुड़ स्तंभ' (सूर्य मंदिर कोणार्क) से लाकर यहां गाड़ा गया है।

चालुक्य कालीन स्थापत्य

- बादामी के चालुक्यों की स्थापत्य कला की शुरुआत ऐहोल से होती है, जबकि चरमोत्कर्ष बादामी और पट्टदकल में दिखता है। यह नागर और द्रविड़ शैली की विशेषताओं से युक्त बेसर शैली है।
- ऐहोल में 70 से अधिक मंदिर हैं। जिनमें रवि कीर्ति द्वारा बनाया गया मेगुति जैन मंदिर तथा लाढखान का सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। बादामी में मिली चार गुफाएं शिव, विष्णु, विष्णु अवतार, व जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ से संबंधित है। बादामी के भूतनाथ मल्लिकार्जुन और येलम्माह के मंदिरों के स्थापत्य की सराहना हुई है।
- ऐहोल का मंदिर कर्नाटक के बीजापुर जिले में स्थित है। दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य का प्रारंभ यहीं से हुआ। ऐहोल मंदिर वास्तु में बौद्ध चैत्य का हिंदू मंदिर पर प्रभाव दिखता है। यहां का विशिष्ट मंदिर दुर्गा मंदिर है।
- हंपी में अवस्थित विरुपाक्ष मंदिर, अतीत के मंदिरों में एक ऐसा मंदिर है, जो कलाकारों के भावों से भरा है। इसकी बाहरी दीवारें पूर्णतया चित्रित है और अर्धस्तंभो द्वारा पट्टिकाओं में विभक्त हैं।
- यहां चैत्याकार मेहराब के द्वारा ताखें बनी हैं, नाकि पापनाथ की तरह दो खंभों और तिकोने वितान की आकृति में। दीवारों के अर्थ स्तंभ नीचे से निश्चित दूरी पर बने हैं और ऊपर की ओर झुकते हुए जाकर परस्पर मिल जाते हैं।

राष्ट्रकूट कालीन स्थापत्य

- राष्ट्रकूट के स्थापत्य में महाराष्ट्र के औरंगाबाद में एलोरा नामक स्थल और मुंबई के निकट एलिफेंटा द्वीप पर स्थित एलीफेंटा की गुफाएं महत्वपूर्ण हैं।
- 'रॉक-कट आर्किटेक्चर' का बेहतरीन उदाहरण है - एलोरा की गुफाएं। इन्हें 1983 में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया। जिसमें कैलाश गुफा मंदिर (गुफा संख्या-16) की गणना विश्व स्तर की भव्यतम कलाकृतियों में की जाती है। इसकी तुलना एथेंस के प्रसिद्ध मंदिर 'पार्थेनन' से की गई है। विश्व विरासत में शामिल एलीफेंटा की अधिकतर गुफाएं हिंदू (शिव) और शेष बौद्ध धर्म को समर्पित है। जबकि एलोरा, हिंदू, बौद्ध, जैन तीनों को समर्पित रहा है।
- एलिफेंटा में बनी त्रिमूर्ति विश्वप्रसिद्ध है, जो शिव के ही तीनों रूपों की है। कोकणी मौर्योंके समय में इस द्वीप को 'धारापुरी' कहा जाता था। बाद में हाथी की एक विशाल प्रतिमा मिलने के कारण पुर्तगालियों ने इसे एलिफेंटा नाम दिया।
- चालूक्यों के पश्चात राष्ट्रकूट उनके राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्तराधिकारी हुए। उनके द्वारा निर्मित मंदिरों की शैलियों के साथ उन्होंने मंदिर निर्माण में अद्वितीय सफलता प्राप्त की। यह राष्ट्रकूट कालीन द्रविड़ शैली के मंदिर का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

- एलोरा का कैलाश मंदिर लंबे समय में कई चरणों में पाषाणों को काटकर तैयार किया गया है। इसी विशेषता यह है कि अन्य मंदिरों का निर्माण जहां नीचे से शुरू होता है वहीं इसका निर्माण चोटी से प्रारंभ किया गया। इसकी योजना अत्यंत विशाल है। इसके निर्माण का श्रेय राष्ट्रकूट नरेश दंतिदुर्ग और कृष्ण प्रथम को जाता है। एलोरा का कैलाश मंदिर भारतीय कला में निर्मित अकेली सर्वोत्कृष्ट कृति ही नहीं अपितु प्रस्तर वास्तु का बेमिसाल उदाहरण भी है।

पल्लव कालीन स्थापत्य

- पल्लव काल के विकास की शैलियों को क्रमशः महेंद्र शैली(610-640 ईसवी), मामल्ल शैली (640-674 ईसवी), राजसिंह शैली (674-800 ईसवी), नंदी वर्मन-अपराजित वर्मन शैली (8वीं- 9वीं शताब्दी) में देखा जा सकता है।
- पल्लव शासक महेंद्र वर्मन के समय वास्तु कला में मंडप निर्माण प्रारंभ हुआ। राजा नरसिंह वर्मन ने चिंगल पेट में समुद्र किनारे महाबलीपुरम उर्फ मामल्लपुरम नामक नगर की स्थापना की और रथ निर्माण का शुभारंभ किया। पल्लव कालीन आदि वराह, महिष मर्दिनी, पंचपांडव रामानुज आदि मंडप विशेष प्रसिद्ध है।
- 'रथ मंदिर' मूर्तिकला का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जिनमें धर्मराज रथ, द्रौपदी रथ, नकुल-सहदेव रथ, अर्जुन रथ, भीम रथ, गणेश रथ, पिंडारी रथ तथा वलैयंकुट्टै प्रमुख हैं।
- बैकुंठ पेरूमल मंदिर में भगवान विष्णु की मूर्तियों के साथ-साथ दीवारों पर युद्ध, राज्याभिषेक, अश्वमेध, नगर जीवन आदि के दृश्यों को भी अत्यंत सजीबता एंव और कलात्मकता के साथ उत्कीर्ण किया गया है।
- आगे पल्लव काल के नंदी वर्मन-अपराजित वर्मन शैली में संरचनात्मक मंदिर निर्माण की शुरुआत हुई और दक्षिण भारत में एक स्वतंत्र शैली उभरी, जिसे द्रविड़ शैली कहा जाता है।
- राजसिंह शैली के उदाहरण महाबलीपुरम के तटीय मंदिर, अर्काट का पनमलाई मंदिर, कांची के कैलाश नाथ और बैकुंठ पेरूमल का मंदिर आदि है।

चोल कालीन स्थापत्य

- द्रविड़ वास्तुकला या वास्तु शैली का जो प्रारंभ पल्लव काल में हुआ, उसका चरमोत्कर्ष चोल काल में देखने को मिला है। इस काल को दक्षिण भारतीय कला का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।
- चोल इतिहास के प्रथम चरण (विजयालय से लेकर उत्तम चोल) में नंगा बरम का श्री सुंदरेश्वर मंदिर, कन्नूर का बाल सुब्रमण्यम मंदिर, नरतमालै का विजयालय चोलश्वर मंदिर, कुंभकोणम का नागेश्वर मंदिर तथा कदम पर कदम्बरमलाई मंदिर आदि का निर्माण हुआ।
- महान चोलों (राजराज I से कुलोतुंग III) के दौर में तंजावूर (तंजौर) में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण हुआ। जिसे द्रविड़ शैली का सर्वोत्तम नमूना माना जा सकता है। गंगगैंकोंडचोलापुरम का शिव मंदिर (राजेंद्र प्रथम का) ख्याति प्राप्त है।
- तंजावूर स्थित प्रसिद्ध शैव मंदिर, जिसे बृहदेश्वर तथा दक्षिण मेरू के नाम से जाना जाता है, चोल सम्राट राजराज (985-1012 ईस्वी) की महानतम रचना है।
- स्थापत्य कला की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी संरचना का मंदिर है, जो ग्रेनाइट से बना है। दक्षिण भारत में स्थापत्य कला के विकास में इस मंदिर को एक युगांतकारी घटना माना गया है।
- यह मंदिर 240.9 मीटर लंबी (पूर्व-पश्चिम) तथा 122 मीटर चौड़ी (उत्तर-दक्षिण) विशाल आंतरिक प्रकार के भीतर स्थित है। इसमें पूर्व में एक गोपुरम तथा तीन अन्य साधारण तोरण प्रवेश द्वार हैं।
- यह मंदिर अपने विशालकाय अनुपात डिजाइन की सादगी के चलते भवन निर्माण कला में ना केवल दक्षिण भारत बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया में भावी डिजाइनों के लिए प्रेरणा स्रोत बना ।
- तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर, इसका शिखर गुमटीदार गुंबद के रूप में है, जो कि अष्टकोणीय है। भव्य उपपीठ, अधिष्ठान, अर्ध महा, मुख्य मण्डपों जैसे अक्षीय रूप से निर्मित समस्त इमारतें सामान्य रूप से मुख्य पूजा स्थल से जुड़ी हैं।
- दीवार में बने आलों और भीतरी मार्गों में दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती और शिव के भिक्षाटन वीरभद्र, कालांतक नरेश, अर्धनारीश्वर तथा आलिंगन रूपों की आदमकद चित्रात्मक प्रतिमाएँ मौजूद है।